आधुनिक हिंदी भाषा एवं साहित्य का इतिहास

किसी भी साहित्य का अपना एक इतिहास होता है। अतीत के यथार्थ स्वरूप का अनुशीलन ही इतिहास है। किसी भी देश के साहित्य के सम्यक मूल्यांकन में इतिहास की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। दूसरे शब्दों में इतिहास की जानकारी के बिना साहित्य के क्रमिक विकास को समझा नहीं जा सकता। 'जेम्स थाम्पसन्' ने इतिहास के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए ठीक ही कहा है कि "इतिहास को एक ऐसा महान् पुल समझा जा सकता है, जो काल की नदी पर मेहराब डालता है तथा भूत एवं वर्तमान को परस्पर संयुक्त करता है। किसी भी युग का इतिहास वर्तमान की उपेक्षा करके नहीं लिखा जा सकता। इतिहासकार अतीत की कहानी को वर्तमान के परिपेक्ष्य में रखकर ही लिखता है। यह सर्वविदित है कि हर पीढ़ी को अपना इतिहास नये सिरे से लिखना चाहिए। अतः इतिहास को अतीत के ज्ञान के रूप में स्वीकार करने की धारणा युक्ति युक्त नहीं है।

यह इतिहास ही है जो साहित्य की विभिन्न रचनाओं, परम्पराओं और प्रवृतियों का विश्लेषण करता है, साथ ही आगे की दिशा निर्देशित करता है। किसी भी साहित्य की प्रेरक शक्ति और बदलती हुई प्रवृत्तियों को समझने में इतिहास की सहायता लेनी पड़ती है। हम हिंदी साहित्य के इतिहास में हिंदी साहित्य के इतिहास लेखक की परम्परा, साहित्येतिहास के पुनर्लेखन की समस्याओं पर विचार करेंगे। किसी भी विषयवस्तु का बौद्धिक एवं वैज्ञानिक अध्ययन करने के लिए उसे किन्हीं काल्पनिक पक्षों, खंडों, वर्गों या तत्वों में विभक्त कर लिया जाता है। जिससे कि उसके विभिन्न अव्ययवों को सम्यक रूप में ग्रहण किया जा सके। ऐसा न केवल सैद्धान्तिक क्षेत्र में अपितु व्यावहारिक क्षेत्र में भी किया जाता है।

1.1 इकाई के उद्देश्य

1.2 सभी इकाई के अध्ययन पश्चात विद्यार्थियों को निम्न जानकारी प्राप्त होगी -

1. साहित्येतिहास लेखन के विभिन्न पक्षों से परिचत हो सकेंगे;
2. साहित्येतिहास की विभिन्न पद्धतियों का परिचय प्राप्त कर पाएंगे;
3. हिंदी साहित्य के इतिहास लेखन की परम्परा से अवगत हो पाएंगे;
4. हिंदी साहित्येतिहास लेखन की विभिन्न समस्याओं को समझ सकेंगे
5. हिंदी साहित्य के काल-विभाजन और नामकरण की समस्या को समझ सकेंगे;
6. हिंदी साहित्य के काल-विभाजन के आधारों का विश्लेषण कर पाएंगे
7. हिन्दी साहित्य के इतिहास में आधुनिक काल का परिचय प्राप्त कर सकेंगे। आधुनिक काल की विभिन्न प्रवृत्तियों का विस्तार से अध्ययन किया।
8. हिन्दी भाषा और साहित्य की दृष्टि से यह काल संक्रमण का है, विषय पर विचार कर सकेंगे।

9. आधुनिक काल की कौन-सी कारक प्रवृत्तियाँ थी, जिसने गद्य लेखन का आरम्भ किया। इकाई में हिंदी गद्य साहित्य के विकास के बारे में विस्तार से चर्चा करेंगे। आधुनिक युग को गद्य युग के नाम से जाना जाता है। इसका कारण यह है कि गद्य की जितनी विकास आधुनिक युग में हुआ, उतना पूर्व में कभी नहीं हुआ।
10. राष्ट्रीय आन्दोलन में आधुनिकयुग की भूमिका के महत्व को समझ सकेंगे।
11. भारतेंदु और द्विवेदी युग के गद्य साहित्य के विकास का उल्लेख कर सकेंगे; साथ ही भारतेंदु युगीन व द्विवेदी युगीन काव्य प्रवृत्तियों का मूल्यांकन से अवगत हो सकेंगे।
12. छायावाद, प्रगतिवाद एवं प्रयोगवाद के विषय में जान पाएंगे।
13. नई कविता, नवगीत एक समकालीन कविता के स्वरूप से परिचित हो सकेंगे।
14. आधुनिक काल के गद्य का स्वरूप किस प्रकार का है।हिंदी गद्य की लोकप्रियता विधाओं से परिचित हो पाएंगे;
15. गद्य और पद्य में अंतर कर सकेंगे;
16. अग्रेंजों के शासन के दौरान भाषा संबंधी विभिन्न दृष्टिकोणों को समझ सकेंगे;
17. खड़ी बोली गद्य की आरंभिक स्थितियों का उल्लेख कर सकेंगे;
18. प्रेमचंद और उनके बाद के कथा साहित्य के विकास को संक्षेप में समझ सकेंगे;
19. हिंदी गघ की प्रमुख विधाओं (कहानी, उपन्यास, नाटक, निबंध, संस्मरण, रेखाचित्र, जीवनी एवं आत्मकथा) की विकास यात्रा को समझ सकेंगे;

1.2 हिंदी साहित्येतिहास के अध्ययन की पूर्व पीठिका

इतिहास दर्शन साहित्येतिहास की जानकारी को बढ़ाती है। इसीलिए साहित्येतिहास को जानने से पूर्व इतिहास-दर्शन को जानना अति आवश्यक है -

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज में अनेक घटनाएं घटती रहती हैं। घटनाओं का इतिहास बनता जाता है और वही इतिहास हमें अतीत से जोड़कर रखता है। इतिहास शब्द इति ह आस से बना है। 'इति' का अर्थ होता है 'ऐसा ही' 'ह' का अर्थ है निश्चित रूप से और 'आस' का अर्थ होता है 'था'। इस प्रकार इतिहास का शाब्दिक अर्थ -निश्चित रूप से ऐसा ही हुआ था, अर्थात् जो घटनाएं भूतकाल में घटित हुई हैं, उन्हीं के क्रमबद्ध तथा विवेचनात्मक वर्णन को 'इतिहास' कहा जाता है।

इस प्रकार हिंदी साहित्य के इतिहास लेखन की परम्परा सतत् चलती रही है। पूर्णकालीन इतिहास ग्रन्थों से प्रेरणा लेते हुए नई मान्यताओं और मौलिकताओं के साथ नए इतिहास ग्रंथ सामने आते रहे हैं। हिंदी साहित्य के प्रारम्भिक इतिहास लेखक गार्सा-द-तासी से लेकर आज तक इस दिशा में क्रमिक विकास चलता रहा है। समय-समय पर नई दृष्टि, नई पद्धति और नए चिन्तन के आधार पर अनुकूल और

संतोषजनक साहित्य इतिहास के तथ्यों का उद्‌घाटन होता रहा है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि हिंदी साहित्य के इतिहास की सुदृढ़ परम्परा सतत् प्रवाहित होती रही है।

1.3 साहित्येतिहास के पुनर्लेखन की समस्याएँ

साहित्येतिहास के स्वरूप का उल्लेख करते हुए आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने लिखा है कि 'जबकि प्रत्येक देश का साहित्य वहाँ की जनता की चित्तवृत्ति का स्थायी प्रतिबिम्ब होता है। तब यह निश्चित है कि जनता की चित्तवृत्ति के परिवर्तन के साथ-साथ साहित्य के स्वरूप में परिवर्तन होता चला जाता है। आदि से अन्त तक इन्हीं चित्तवृतियों की परम्परा को परखते हुए साहित्य परम्परा के साथ सामंजस्य दिखाना ही 'साहित्य का इतिहास' कहलाता हैं। जनता की चित्तवृत्ति बहुत कुछ राजनीतिक, सामाजिक, साम्प्रदायिक, तथा धार्मिक परिस्थिति के अनुसार होती है। हिंदी साहित्य के प्रारम्भ का प्रश्न-हिंदी साहित्य के लेखन की पहली समस्या यह है कि इसका प्रारम्भ कब से माना जाए। शिवसिंह सेंगर, जार्ज ग्रियर्सन और मिश्र बंधुओं ने हिंदी साहित्य का प्रारम्भ सातवीं शती से स्वीकार किया है। राहुल सांस्कृत्यायन ने सातवीं शती के सरहपा को हिंदी का प्रथम कवि माना है, जबकि आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने इसका आरम्भ दसवीं शताब्दी माना है। लेकिन शुक्ल ने जिन कृतियों के आधार पर अपने मत का निर्धारण किया था उनका अस्तित्व भी संदेह की नजर में आ गया है। कुछ विद्‌वानों ने बारहवीं शती से हिंदी का आरम्भ माना है। इसमें डॉ. गणपति चन्द्र का उल्लेख किया जा सकता है। डॉ. उदयनारायण तिवारी, डॉ. नामवरसिंह आदि विद्‌वानों ने हिंदी साहित्य एवं भाषा का आरंभ चौदहवीं शती से माना है। इससे स्पष्ट होता है कि हिंदी साहित्य के प्रारम्भ के संबंधों में कई मत प्रचलित हैं। लेकिन 12 वीं शती को विद्‌वानों ने तर्कसंगत एवं प्रामाणिक माना है।

1. काल विभाजन की समस्याः हिंदी साहित्य को आदिकाल, भक्तिकाल, रीतिकाल तथा आधुनिक काल में विभाजित किया गया है। आचार्य शुक्ल ने अपने हिंदी साहित्य का इतिहास में इसी विभाजन को अपनाया है। लेकिन बाद में यह काल विभाजन भी विद्‌वानों के संदेहों के घेरे में आ गया। साहित्य की लगातार विकासशील प्रकृति के कारण कोई भी काल अन्तिम सत्य के रूप में नहीं स्वीकार किया जा सकता। इतिहास लेखन के लिए काल-विभाजन जितना महत्त्वपूर्ण है उतना ही समस्यापूर्ण भी है।
2. नामकरण की समस्याः हिंदी साहित्येतिहास के लेखन में काल-विभाजन के साथ ही नामकरण की समस्या भी जुड़ी हुई है। इसके लिए कभी प्रमुख साहित्यिक प्रवृत्ति को आधार बनाया जाता है और कभी साहित्यकार को, कभी पद्‌धति का आश्रय लिया जाता है और कभी विषय का। आचार्य शुक्ल ने जिन ग्रन्थों के आधार पर आदिकाल को वीरगाथाकाल कहना उपयुक्त समझा था उसके

बाद के विचारकों ने उस पर एकदम असहमति व्यक्त की और अपने-अपने मत के समर्थन में विभिन्न प्रकार के तर्क प्रस्तुत किये।

3. साहित्यकारों के चयन और निर्धारण की समस्याः हिंदी साहित्येतिहास लेखन में साहित्यकारों के चयन और उनके निर्धारण की भी गंभीर समस्या रहती है। इतिहास लेखक के सामने यह संकट बना रहता है कि किस रचनाकार की रचना को वह अपनी कृति में स्थान दे और किस को न दे। इस कार्य कारण संबंध के बिना इतिहास में काफी त्रुटियाँ होने की संभावना बनी रहती हैं।
4. मूल्यांकन की समस्याः हिंदी साहित्येतिहास लेखन में मूल्यांकन की समस्या भी एक गंभीर समस्या बनी रहती है। इस विषय में डॉ. नामवर सिंह का मत इस प्रकार प्रतिपादित हुआ है कि साहित्य के इतिहास में काल-विभाजन और नामकरण से अधिक महत्त्वपूर्ण मूल्यांकन की समस्या होती है। किसी इतिहासकार की वास्तविक शक्ति रचनाओं, रचनाकारों और रचना प्रवृत्तियों के मूल्यांकन से ही प्रकाश में आ पाती है। इसके लिए यह आवश्यक हो जाता है कि साहित्यलेखक तटस्थ एवं निष्पक्षतापूर्ण कार्य को सम्पन्न करें।
5. इतिहास-लेखन की पद्धति संबंधी समस्याः साहित्येतिहास-लेखन की पद्धति भी साहित्य-इतिहास-लेखन की एक समस्या है। हिंदी साहित्य के प्रारम्भिक इतिहास ग्रन्थों में इस प्रकार की समस्या संबंधी परिचय प्राप्त होता हैं। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने पहली बार हिंदी साहित्य लेखन को वैज्ञानिक स्वरूप प्रदान करने का सफल प्रयास किया। उनके बाद इतिहासकारों ने इतिहास-लेखन का वैज्ञानिक तरीके से अध्ययन किया। आज तक हिंदी साहित्य में युगपरक विभाजन के आधार पर ही अध्ययन की प्रवृत्तियों की पद्धति प्रचलित रही है। इस पद्धति का प्रमुख दोष यह है कि प्रत्येक युग की साहित्यिक प्रवृत्तियों को उस युग की काल सीमाओं तक ही सीमित मान लिया जाता है।